ज्ञानजीवनदास जी स्वामी

मेरे नाथ !

भौतिक उन्नति क्या है ? आध्यात्मिक उन्नति क्या है ?

संसार हमारी आवश्यकता का अनुभव करे – यह भौतिक उन्नति है

और हमें संसार की आवश्यकता न रहे - यह आध्यात्मिक उन्नति है

शरणानन्द जी महाराज

Gyanjivandas ji Swami (Kundal) – Sagar Katha – Aaj ke Sadvichar – Date :1/3/2013 ka yah video recording hai.

https://www.youtube.com/watch?v=ggv7OqJnhCo

प्रवचन :- (गुजराती से हिन्दी)

संसार हमारी आवश्यकता का अनुभव करे – यह भौतिक उन्नति है और हमें संसार की आवश्यकता न रहे - यह आध्यात्मिक उन्नति है | स्वामी शरणानन्दजी ने यह व्याख्या की है | मुझे बहुत पसंद आयी.... भौतिक उन्नति किसे कहते है और आध्यात्मिक उन्नति किसे कहते है उसकी स्पष्ट व्याख्या | कितना ही बड़ा बुद्धिशाली हो, उसे भी स्वीकार हो जाये ऐसी व्याख्या है | संसार हमारी आवश्यकता का अनुभव करे – यह भौतिक उन्नति है और हमें संसार की आवश्यकता न रहे - यह आध्यात्मिक उन्नति है |

आज-कल संप्रदाय में स्थितिवाले सन्तों का बड़ा अभाव है | भौतिक विकास संप्रदाय में पारावार है | आजके मंदिर, आजके सिहासन, आजकी संस्थाएँ, आजके उत्सव – बहुत अच्छे !! सूरत में हम लोग दो दिन रहे | उत्सव, भक्ति, भाव, ढेर सारा दान – यह भौतिक विकास |

आज संपत्तिवाले सब हैं, स्थितीवाले कोई नहीं |
संप्रदाय संपत्तिवाला – स्थितीवाला नहीं
साधु संपत्तिवाला – स्थितीवाला कोई नहीं
आचार्य संपत्तिवाले, बंगलोंवाले – स्थितीवाला कोई नहीं
गई स्थिती – आयी संपत्ति. हो गया भौतिक विकास और हो गया आध्यात्मिक स्थितीका नाश !

कहते है हम, बहुत विकास हुआ सत्संग का ! सत्संग का नहीं, संपत्ति का विकास हुआ हैं | सत्संग इसको नहीं कहते है | सत्संग आध्यात्मिक विकास को ही कहा जाता है | भौतिक विकास को सत्संग किसीने नहीं माना, ग्रंथ नहीं कहते, भगवान ने भी नहीं कहा | वो तो हम कहते हैं बहुत सत्संग का विकास हुआ | अरे भाई ! मंदिर

बना लिया, रहने का स्थान हो गया, मकान हो गये, अच्छे रास्ते बन गये – यह कोई सत्संग का विकास नहीं है, उसे संप्रदाय का विकास भी नहीं कह सकते | क्योंकि संप्रदाय बिल्डिग को,मंदिर को नहीं कहते !

कहाँ वजन (महत्व) देते हैं हम ? कहाँ देना चाहिए ?? क्या करना चाहिए ??? क्या कर रहे हैं ???? सोचो !!!!

पैसो के उपर ध्यान ! दाताओं के उपर ही ध्यान !! उसीकी ही बड़ाई !!! उसीका ही मान !!!!

कोई भक्तिवाला – भजनवाला हो तो उसको कौन जानता है ? स्थितिवालों की उपेक्षा, तिरस्कार करते है | इसलिए आज कोई स्थितीवाला नहीं है | आपको भगवान् दर्शन देते हैं – सब बात सही, छः घंटा ध्यान में बैठते हो लेकिन तुमसे क्या फायदा (तने शुं धोई पीवानो) ? यहाँ लाख रूपया दिया तब यह हुआ | तुमसे (स्थितिवालों) क्या फ़ायदा ? बात करता है....जाओ कोनेमें बैठो ...यहाँ तंग मत करो ....बोलो, आप कितना लिखाते हो ? लिखो, हमारे दो लाख....हाँ....यह बात है ! कुछ विकास होना चाहिए न संप्रदाय का !!! यह विकास किया था तो आपने ध्यान किया और स्थिती हुई, ऐसे ही थोड़ी स्थिती हुई है ? स्थिती....स्थिती....चोंटे हो....आओ भाई ! कितना लिखाओगे ? ऐसी बात है.... कुछ समजे ?

बोलो, आध्यात्मिक विकास और भौतिक विकास किसे कहते है ? संसार हमारी जरुरीयात अनुभव करे –ये भौतिक विकास हमारा....और हमें संसार की जरुरत न रहे, मात्र प्रभु (मूर्ति) में डूब जाये – ये है अपना आध्यात्मिक विकास |

कौन सा विकास करना चाहिए ? और कौन सा हम सब मिलकर कर रहें हैं ?-यह बहुत ही बड़ा विचारनेलायक प्रश्न है....

अध्यात्म-जगत को चेत-सावधान करानेवाला यह क्रान्तिकारी प्रवचन video कृपया forward करे !